आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

# मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2659 • उदयपुर, बुधवार 06 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

## आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

## अहमदाबाद (गुजरात) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 27 मार्च 2022 को अन्ध कल्याण केन्द्र, पिंक सिटी के पास रानीप, अहमदाबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता अन्ध कल्याण केन्द्र, करुणा ट्रस्ट एवं भारतीय जनता पार्टी साबरमती रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 430, कृत्रिम अंग माप 68, कैलिपर माप 36 की सेवा हुई तथा 29 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प्रदीप जी परमार (सामाजिक कल्याण अधिकारिता मंत्री, गुजरात सरकार), अध्यक्षता श्री अरविन्द भाई पटेल (विधायक साबरमती, अहमदाबाद), विशिष्ट अतिथि श्री अमृत भाई पटेल (मंत्री–करुणा ट्रस्ट), कुसुम बेन आर.शाह (प्रमुख–अन्ध कल्याण), श्रीमान् शंकर भाई एल.पटेल, श्री वल्लभ भाई धनानी (समाज सेवी) रहे। डॉ. नवीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. नेहा जी अग्निहौत्री (पी.एन.डो.), श्री नाथूसिंह जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (उप प्रभारी) श्री बहादुर सिंह जी मीणा (सहायक), श्री कैलाश जी चौधरी (आश्रम प्रभारी अहमदाबाद), श्री सूरज जी सेन (आश्रम साधक अहमदाबाद) ने भी सेवायें दी।

## शामली (उत्तरप्रदेश) में दिव्यांगों को राहत का उपक्रम

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 27 मार्च 2022 को जे.जे. फॉर्म कैराना रोड़, शामली (उत्तरप्रदेश) मे हुआ। शिविर सहयोगकर्ता माता अमृता नन्दमयी देवी कृपा सेवा समिति, शामली (उत्तरप्रदेश) रही। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 236, कृत्रिम अंग माप 25, कैलिपर माप 16 की सेवा हुई तथा 27 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर मं मुख्य अतिथि श्रीमान् अरविंद जी संगल (निर्वतमान नगरपालिका चेयरमैन, शामली), अध्यक्षता श्रीमान सुनिल जी गर्ग (संस्थापक माता अमृता नन्दमयी सेवा समिति, शामली), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् सूर्यवीर सिंह जी (चेयरमेन बी.एस.एम. स्कूल, शामली), श्रीमान् अमित जी गर्ग (सचिव, अमृता नन्दमयी सेवा समिति), श्रीमान् डॉ.दीपक जी मित्तल (कोशाध्यक्ष) श्रीमती अनिता जी गर्ग (समाज सेवी) रहे।

डॉ. राकेश जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. अरविन्द जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री भगवती जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम मे मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री हरीश रावत, श्री देवीलाल जी मीणा (सहायक), श्री मुन्ना सिंह जी (फोटोग्राफर) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

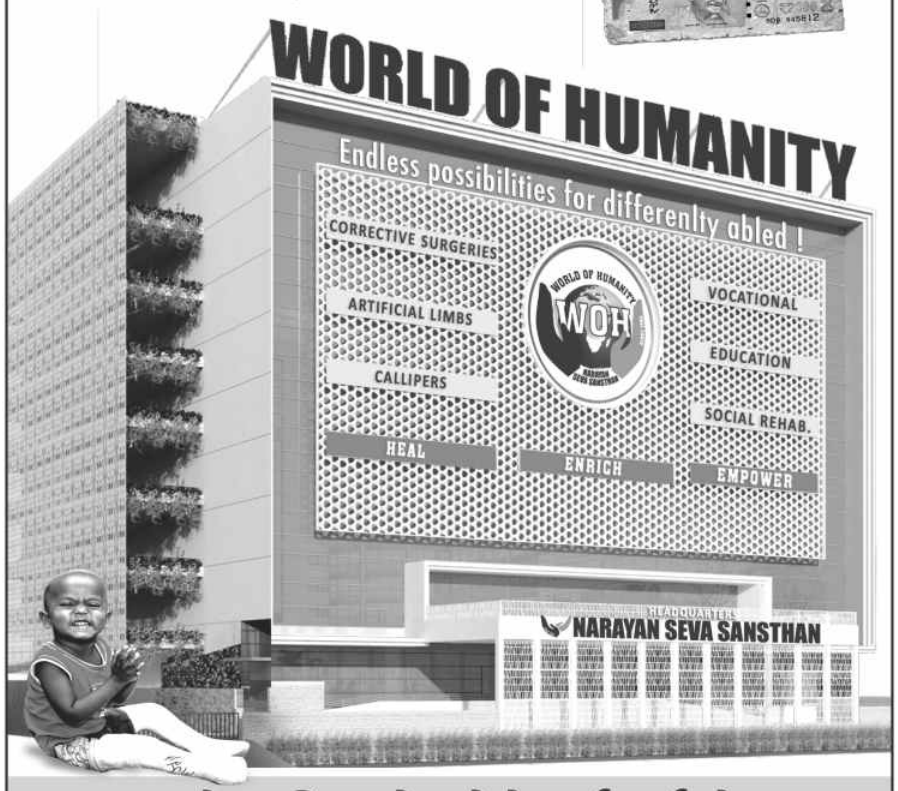


मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
SINCE 1985

स्नेह मिलन समारोह
दिनांक : 10 अप्रैल, 2022
स्थान
काशीराम अग्रवाल भवन, गुलवाई टेकरा, बी.आर.टी.सी. के सामने, पॉजरापोल, अहमदाबाद, सायं 4.30बजे
उत्तरबंगा मारवाड़ी सेवा ट्रस्ट, 21/2 मील, सेवा के रोड, सिलीगुडी, प.बंगाल, सायं 4.30 बजे
होटल सिराज रेजीडेंसी, खानपुरी गेट, बस स्टेण्ड के पास, होशियारपुर, प्रातः 11.00 बजे
इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

# पेड़ से प्रेरणा

जीवन में विकास करना आवश्यक है। विकास न हो तो एक जगह थम कर रह जाएंगे। कोई प्रगति नजर नहीं आएगी। ध्यान रहे कि हर कोई विजेता बनने के लिए जन्म लेता है परन्तु वास्तविक विजेता वह होता है जो जीतने की योजना बनाता है और उसके अनुरूप प्रयत्न करता है।

लोग यह मान लेते हैं कि वे जिन्दा रहेंगे तो विकास अपने आप हो जाएगा। वे ऐसा मानते हैं कि स्वयं का विकास जिन्दा रहने का स्वाभाविक परिणाम है, परन्तु ऐसा नहीं है। विकास अपने आप नहीं होता। यह भी जरूरी नहीं कि यह अनुभव के साथ आ जाए या जानकारी इकट्ठा करने से मिले। व्यक्तिगत विकास सप्रयास, सुनियोजित और लगातार होता है।

विकास का समय सुनियोजित होना चाहिए। जीवन की व्यस्तताओं के क्षणों में यह सुनिश्चित कर लें कि व्यक्तित्व विकास के लिए हमें अध्ययन, चिन्तन–मनन में कितना समय देना है। फिर इसका उपयोग अपने जीवन में किस तरह करना है। यह ध्यान रहना चाहिए कि विकास की कोई मंजिल नहीं होती। यह एक सतत् प्रक्रिया है जो जीवन–पर्यंत चलती रहती है। हमारा समाज ऐसे लोगों से भरा है, जो मंजिल पर पहुंचने के बाद भी खुद को उतना ही अपूर्ण पाते हैं जितने कि वे सफल होने के पहले थे। यात्रा का लक्ष्य मंजिल पाना ही नहीं है, इसका लक्ष्य यह भी है कि आपने रास्ते में क्या सीखा और क्या बने। विकास यात्रा में जो भी आपने सीखा है या अनुभव प्राप्त किए हैं उसे दूसरों के साथ बांटे। इससे आपका अंतर्ज्ञान बढ़ता है और सांझा भविष्य–दृष्टि मिलती है, साथ ही आप ज्यादा जवाबदेह बनते हैं। विकास की प्रक्रिया की प्रेरणा वृक्षों से लेनी चाहिए। बीज से अंकुरित होकर एक सम्पूर्ण वृक्षों से लेनी चाहिए। बीज से अंकुरित होकर एक सम्पूर्ण वृक्ष बनने तक की वृक्ष की यात्रा तमाम अवरोधों से भरा हुआ होता है। पूरी तरह विकसित वृक्ष जैसा कुछ नहीं होता है। जिस दिन वृक्ष विकास करना छोड़ देता है, उसी दिन वह समाप्त हो जाता है।

# प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

राम भगवान के पास खर–दूषण के दूत आये। नालायक, पिशाच की तरह, बेताल की तरह कोई नृत्य कर रहा है, किसी का सिर नहीं है, किसी का हाथ नहीं है, किसी का पैर नहीं है। ये पिशाच, ये बदमाश, ये नालायक, ये दुष्ट, ये अच्छे कामों में रोड़ा डालने वाले। ये महाकंजूस और ऐसे कटु वचन बोलने वाले। जिनकी वाणी में भी खराबी है। जिनके कर्मो में भी खराबी है। ऐसे पिशाचों ने आकर कहा– रामजी रामजी आपरे लिये खर– दूषण जी कहलायो है, आप राम और लक्ष्मण भागी जाओ। पाछा अयोध्या में परा जाओ। और आप री जो स्त्री है नी सीता, कटे छिपाई रखी वने। वणाने माणे हवाले कर दो। रामजी हँस दिया।

**देखी राम रिपुदल चलि आवा।**
**बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा।।**

कठिन कोदंड चढ़ाकर बोले– हम राम– लक्ष्मण तो तुम्हारे जैसे पापियों को ढूंढ़ते रहते। तुम जानवर हो जानवर, तुम इन्सान नहीं हो। तुम जानवर से भी गये बीते हो। अरे जानवर में भी जानवर, वो शेरनी भी थी, जब छत्रपति शिवाजी एक कमंडल लेकर जंगल में आ गये थे। हाथ जोड़कर कहा– माँ, शेरनी माँ में तुझे कष्ट देने नहीं आया माँ। मेरे पास कोई शस्त्र नहीं है, मेरे पास तो कमंडल है। मेरे समर्थ गुरु स्वामी रामदासजी जिन्होंने सब को हिन्दुत्व की रक्षा के लिये जिनका अवतार हुआ है। उनके पेट में दर्द है, आयुर्वेद के वैद्य बताते है। उनके पास ऐसी दवाई है पर माँ तेरे दूध में मिला के उसको लिया जायेगा। शेरनी खड़ी हो गयी, पशु की शेरनी खड़ी हो गयी। जंगल की रानी खड़ी हो गयी। और छत्रपति शिवाजी ने दूध दूह लिया। ऐसे हमारे यहाँ हुए है।

# भाव जगत्

पिता पुत्र को दूध का गिलास पीने के लिए देता। गिलास तो वही, पर धीरे धीरे दूध कम होता गया। पुत्र ने दूध घटने की बात पूछी। पिता ने कहा– अकाल है। चरने के लिए घास नहीं मिलती है। लड़के ने कहा–मैं उपाय करता हूं। उसने गाय की आंखों पर हरे रंग का चश्मा लगा दिया। अब गाय को सूखा घास भी हरा दिखने लगा। वह चरने लगी। दूध बढ़ गया।

गाय में भावात्मक परिवर्तन हुआ। वह घास भी अधिक खाने लगी और दूध भी अधिक देने लगी। हम बाह्य को जानना ज्यादा पसंद करते हैं। हमें तो कठपुतली ही दिखाई देती है, जो बोलती है, नाचती है, गाती है, खेलती है। उसको जो पर्दे के पीछे से संचालित कर रहा है, उस ओर ध्यान ही नहीं जाता। हमारे जीवन का संचालन भाव करते हैं, जो पर्दे के पीछे हैं। उनकी ओर हमारा ध्यान नहीं है। जब तक शिक्षा के साथ भाव–जगत् का संबंध नहीं जुड़ेगा तब तक न उपद्रव मिटेंगे, न हड़तालें समाप्त होंगी और न अनुशासन आएगा। हम बुद्धि के शस्त्र को तेज करते जा रहे हैं। उसका काम है काटना। नंगी तलवार बहुत खतरनाक होती है। उसके लिए म्यान चाहिए। म्यान में पड़ी तलवार खतरनाक नहीं होती। बुद्धि को हमने नंगी तलवार तो बना डाला। अब उस पर म्यान का खोल डालना आवश्यक है जिससे कि सीधा खतरा न हो। यह है भाव–जगत् की प्रक्रिया।


## दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

| ऑपरेशन संख्या | सहयोग राशि | ऑपरेशन संख्या | सहयोग राशि |
|---|---|---|---|
| 501 ऑपरेशन के लिए | 17,00,000 | 40 ऑपरेशन के लिए | 1,51,000 |
| 401 ऑपरेशन के लिए | 14,01,000 | 13 ऑपरेशन के लिए | 52,500 |
| 301 ऑपरेशन के लिए | 10,51,000 | 5 ऑपरेशन के लिए | 21,000 |
| 201 ऑपरेशन के लिए | 07,11,000 | 3 ऑपरेशन के लिए | 13,000 |
| 101 ऑपरेशन के लिए | 03,61,000 | 1 ऑपरेशन के लिए | 5000 |

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

### आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मित्ति

( वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें )

| | |
|---|---|
| नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि | 37000/- |
| दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि | 30000/- |
| एक समय के भोजन की सहयोग राशि | 15000/- |
| नाश्ता सहयोग राशि | 7000/- |

### दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

| वस्तु | सहयोग राशि (एक नग) | सहयोग राशि (तीन नग) | सहयोग राशि (पाँच नग) | सहयोग राशि (ग्यारह नग) |
|---|---|---|---|---|
| तिपहिया साईकिल | 5000 | 15,000 | 25,000 | 55,000 |
| व्हील चेयर | 4000 | 12,000 | 20,000 | 44,000 |
| केलीपर | 2000 | 6,000 | 10,000 | 22,000 |
| वैशाखी | 500 | 1,500 | 2,500 | 5,500 |
| कृत्रिम हाथ/पैर | 5100 | 15,300 | 25,500 | 56,100 |

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

### मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

| | |
|---|---|
| 1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500 | 3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500 |
| 5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500 | 10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000 |
| 20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000 | 30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000 |

## सम्पादकीय

आज व्यक्ति की सहनशक्ति क्यों खोती जा रही है? क्यों वह छोटी–छोटी बातों में इतना उग्र हो जाता है कि उसे आपा भी याद नहीं रहता? क्या कारण है इस उन्माद का? थोड़ा गहराई से देखें तो अनुभव आएगा कि व्यक्ति की दमित कुंठाएं ही इसकी जिम्मेदार हैं। पहले व्यक्ति की सहनशीलता कम से कम एक सीमा तक तो दिखाई देती थी, आज तो मामूली सी बात पर विस्फोट हो जाता है। ये कुंठाएं किस कारण से है? हो सकता है व्यक्तिशः इसके कारण अलग–अलग भी हों पर एक सामान्य कारण तो यह भी है कि विचारों की साझेदारी, एक दूसरे से दुःख–दर्द बाँटने की प्रकृति और किसी पर विश्वास कर लेने की स्थितियाँ बिगड़ती जा रही है। व्यक्ति वही करने का मानस बनाता है जो वह पढ़ता, देखता व सुनता है। उसे वही समझ में आता है। आज हमारे चारों ओर ऐसे नकारात्मक विचार, ध्वंसात्मक क्रियाकलाप और दृश्य फैले पड़े हैं कि कोई कितना भी प्रयास करे तो भी काजल की कोठरी से कोरा निकलना कठिन है। जरूरत है वातावरण को सुधारने की। यह शुरुआत स्वयं से ही करनी होगी। हम ही संकल्प लें कि सकारात्मक अपनायेंगे व बिना तह में गए किसी बात से प्रभावित नहीं होंगे।

## कुछ काव्यमय

**कुदरत और परमात्मा, कितने भये उदार।**
**मानव झोली में भरा, दुनिया भर का प्यार।।**
**कुदरत से ही पुष्ट है, मानव तन भरपूर।**
**ये ही इसको पोषती, इससे ही है नूर।।**
**फिर भी हमीं बिगाड़ते, इसका पावन रूप।**
**उसको उजड़ा कर रहे, करते उसे कुरूप।।**
**वनस्पति और खग बने, कुदरत के सिंगार।**
**करते हैं हम ज्यादती, करते ध्वस्त निखार।।**
**कब चेतेंगे क्या पता, मेधा दो भगवान।**
**समझदार हम सिद्ध हों, नहीं रहें नादान।।**

# सच्चा धर्म

जीवन में सिर्फ आपका धर्म काम आता है। दूसरों की सेवा और पीड़ितों की पीड़ा को दूर करने का प्रयत्न ही जीवन को सार्थक बनाता है। आपके बुरे समय में भी धर्म ही सहायक रहता है। धर्म के अनुसरण से मनुष्य को अपने कष्टों से मुक्ति मिलती है।

सेठ मनचंदा को बड़े लोग धन्नासेठ कहते। लोग खाली हाथ आते और भरे हाथ जाते। एक दिन की बात है सेठ बड़ी चिंतित मुद्रा में सेठानी से बोला, 'व्यापार में भारी घाटा लगा है और सब कुछ चला गया है। सुबह आस रखने वाले आएंगे तो हम उन्हें क्या देंगे ? हमें आज ही यह नगर छोड़ना होगा।' सेठानी ने कहा 'जैसी आपकी इच्छा।' सेठानी ने चार रोटियां बांधी और दोनों रातों–रात ही चल पड़े। सेठानी के हाथ में चार सोने की चूड़ियां थी, सेठ ने सोचा उसी से

कोई व्यापार शुरू करेंगे। राह में उन्होंने देखा कि एक कुतिया ने चार बच्चों को थोड़ी देर पहले ही जन्म दिया था और वह भूखी कुतिया अपने ही बच्चों को खाने पर आमादा थी। सेठानी ने अपनी चारों रोटियां कुतिया को देकर चारों बच्चों को बचा लिया। उसके बाद वे आगे बढ़े तो एक सुदामा मिला जो अपनी बेटी के ब्याह के लिए चिंतित था। सेठानी ने अपने हाथ की चारों चूड़िया निकालकर उसे दान कर दीं।

इस तरह चलते–चलते वे एक नगरी में पहुंचे। पता चला कि यहां राजा की बेटी जादुई आईने में धर्म देखती और खरीदती है। सेठ ने कहा 'मैंने सदा दान–धरम किया है। अब समय आ गया है कि मैं अपना एक धर्म बेच कर कुछ ले आता हूँ।' राजकुमारी ने आईने में देखा तो सेठ का कोई धर्म नहीं दिखा, सिर्फ सेठानी के दो धर्म दिखे। राजकुमारी ने पूछा 'बोलो कौनसा धर्म बेचोगे ?' सेठ समझ गया कि उसके पास देने को बहुत कुछ था इसलिए उसका 'देने का धर्म' नहीं हुआ जबकि सेठानी ने आखिरी जमा–पूंजी भी दान की दी और मुंह का निवाला देकर पराए पिल्लों को बचाया, वही सच्चा धर्म था। सेठ ने कहा, 'ये दो धर्म ही हमारे साथ हैं, वह भी बेच देंगे तो परलोक किस मुंह से जाएंगे।' सेठ ने फिर मेहनत– मजदूरी कर पुनः अपना व्यवसाय खड़ा कर लिया।

**– कैलाश 'मानव'**

# दुर्जन और सज्जन

**सोना, सज्जन,**
**साधुजन टूट जुड़े सौ बार**
**दुर्जन कुम्भ कुम्हार के,**
**एके धके दरार।**

प्रसिद्ध संत सरयूदास जी महाराज एक बार रेल में यात्रा कर रहे थे। एक मोटा हृष्ट–पुष्ट एवं मजबूत कद–काठी का पुरुष उनके पास में बैठ गया। वह व्यक्ति बार–बार सरयूदास जी के पास खिसक रहा था और अपना पैर उनके पैर के ऊपर रखने की कोशिश कर रहा था। हर थोड़ी–थोड़ी देर में वह उनको धक्का देने की कोशिश करता। सरयूदास जी महाराज थोड़ी देर तक सब– कुछ सहन

करते रहे, परंतु वह व्यक्ति अपनी हरकत से बाज नहीं आया। वह उससे जितना बचने की कोशिश करते, वह व्यक्ति उतना ही अधिक उनके पास खिसककर, उन्हें परेशान करता। अब बहुत देर हो चली थी।

महाराज जी ने अत्यन्त प्रेमपूर्वक उस व्यक्ति से कहा– भाई लगता है आपके पैरों में दर्द है। लाइए मैं आपके पैर दबा देता हूँ। ऐसा कहते हुए उन्होंने उसके पैर अपनी गोद में रख लिए और प्यार से दबाने लगे। उस व्यक्ति को अपनी गलती का अहसास हो गया और वह शर्म से पानी–पानी हो गया। उसने अपने पाँव हटा लिए तथा हाथ जोड़कर, महाराज जी से अपनी गलती के लिए क्षमा माँगते हुए कहा– आपके जैसे सज्जन पुरुष ही ऐसा कर सकते हैं। मैं तो आपको कष्ट दे रहा था, परंतु बदले में आपने तो मेरे पैरों को दबाना शुरु कर दिया। मैं आपके प्रेम और दया भाव को शत–शत वंदन करता हूँ। ऐसा कह कर उस व्यक्ति ने सरयूदास जी के पाँव छू लिए। दृष्टिकोण अगर अच्छा हो तो दुर्जन लोगो के साथ भी सज्जनता से रहा जा सकता है और जो लोग सज्जन होते हैं, वे झगड़ते नहीं हैं, वे विवाद खड़ा नहीं करते, बल्कि वे तो प्रेम के अनंत स्रोत होते हैं।

**–सेवक प्रशान्त भैया**

# एक सेवाभावी मानव की जीवनी

**( वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से )**

कैलाश को यह सब देख खुशी होती थी। अब उसने अपने झोले में गीता प्रेस गोरखपुर की कुछ पुस्तकें भी रखनी शुरू कर दीं। पतली–पतली शिक्षाप्रद पुस्तकें बहुत कम कीमत में आती थी। कैलाश 10–12 एक साथ खरीद कर झोले में रखने लगा। ये पुस्तकें मरीजों को पढ़ने के लिये देता और वो पढ़ लेते तो वापस ले कर किसी अन्य को दे देता। एक बार किसी वृद्ध को उसने पुस्तक दी तो उसने अपनी लाचारी बताते हुए कहा कि वो तो अंगूठा छाप है, उसे पढ़ना नहीं आता। कैलाश ने अपने झोले से एक दूसरी पुस्तक निकाली और वृद्ध को दी। इस पूरी पुस्तक में सीता राम, सीता राम लिखा हुआ था। कैलाश ने इसके साथ ही एक पेन्सिल भी दी और उसे समझाया कि पूरी पुस्तक में सीता–राम लिखा हुआ है, हर शब्द पर यह पेन्सिल रख कर आप सीता राम बोलते जाना, इस तरह आप पूरी पुस्तक पढ लोगे।

अगले दिन कैलाश वापस उस वृद्ध के पास गया तो वह अत्यन्त प्रसन्न नजर आया। कैलाश को देखते ही अति उत्साह से उसने बताया कि अनपढ़ होने के बावजूद पुस्तक को पढ़ने में इतना मजा आया कि रात को दो बजे तक वह पुस्तक पढ़ते हुए सीता–राम, सीता–राम बोलता रहा। वृद्ध का उत्साह देखकर कैलाश को अचानक अपने बचपन की एक घटना याद आ गई। वह छोटा था तब अपने माता–पिता के साथ भीण्डर में रहता था। तब एक रामाजी कुम्हार हुआ करते थे। कैलाश के पिता ने बताया कि इसके रोम रोम में राम निकलता है। कैलाश को अपने पिता की बात पर यकीन नहीं हुआ तो उसने स्वयं वास्तविकता जानने की कोशिश की। गांव के भीण्डरेश्वर महादेव में दर्शन करने सभी जाते थे। रामाजी कुम्हार भी यहां आते थे। कैलाश भी अपने पिता के साथ इस मंदिर में जाता था। एक दिन कैलाश रामाजी के पास बैठ गया और सुनने की कोशिश करने लगा कि उनके शरीर से राम राम की आवाज आती है या नहीं। आरती होने लगी, सभी खड़े हो गये तो कैलाश भी रामाजी से चिपक कर खड़ा हो गया। झालर–घन्टों की ध्वनि और आरती के साथ घन्टियों की मधुर स्वर लहरी के बीच ही कैलाश को कहीं से राम–राम के मद्धिम स्वर की आवाज भी आई। आज अस्पताल में इस वृद्ध मरीज के सीता–राम बोलने के उत्साह के साथ ही कैलाश सोचने लगा कि यह उसके बाल मन का भ्रम था या रामाजी में सचमुच कोई ऐसा करिश्माई व्यक्तित्व था। जो भी हो भक्ति की महिमा निराली ही है।

**अंश - 056**

# लगन में सफलता

राजा टॉलमी के मन में गणित सीखने की भावना उत्पन्न हुई। इसके लिए तब के महान गणितज्ञ यूक्लिड का चयन किया गया। यूक्लिड बराबर पढ़ाने आते रहे, लेकिन टॉलमी के दिमाग में गणित घुस ही नहीं रहा।

एक दिन परेशान भी हुए और उद्विग्न भी। इधर सत्ता का घमंड भी इस कारण उसे गणित सीखने में आनंद नहीं आ रहा था। ध्यान भटकता रहता था।

एक दिन परेशान होकर टॉलमी ने बोल ही दिया– आप तो बहुत बड़े विद्वान कहे जाते हैं। मुझे गणित के सरल सूत्र सिखाइये ताकि मुझे सहजता से समझ में आ सके। अभी तक तो मुझे गणित का एक भी सूत्र सही ढंग से समझ में नहीं आया है। तब क्या खाक मैं गणित का विद्वान बन पाऊंगा।

राजा की बात सुनकर मुसकराते हुए यूक्लिड ने कहा– राजन्! मै। तो पूरे मनोयोग के साथ गणित के सरलतम सूत्रों को ही सिखा रहा हूँ। कठिनाई सिखाने में नहीं, आपके सीखने में हो रही है। आवश्यकता है ध्यान एकाग्र करने की।

जैसे आप राजकीय व्यवस्थाओं में पूरी एकाग्रता के साथ ध्यान लगाते हैं। उसी तरह इधर भी रूचि लेने तो काम सरल हो जाएगा।

गणित को भार मानकर, अन्य मनस्क न होकर लगन के साथ समझने का प्रयास करें। सब सरल हो जाएगा।

टॉलमी को बात समझ में आई। लगन के साथ पढ़ाई ने उन्हें गणितज्ञ बना दिया। आप भी इसी प्रकार अहंकार को एक तरफ रखकर लगन के साथ पुरुषार्थ करने पर अपने मनवांछित अभीष्ट कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

# पपीता मात्र फल नहीं औषधि भी है

पपीते से विटामिन ए व डी मिलते हैं जो आंखों के तथा त्वचा के लिए अत्यंत लाभकारी है। हड्डियों को मजबूत करनेवाला तथा कैल्शियम तथा रक्त को बढ़ाने वाला लोहा भी इस फल में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

पका पपीता विटामिन ए से भरपूर होता है एवं आंखों के लिए विटामिन ए बहुत ही आवश्यक है, अतः रतौंधी, अधांपन एवं आखों की कमजोरी में पपीता का प्रयोग आवश्यक है। विटामिन ए की कमी से कीटाणुओं का शरीर में शीघ्रता से संक्रमण हो जाता है साथ ही श्वास रोग, तपेदिक व निमोनिया भी हो सकते हैं। पपीता शरीर में विटामिन ए की कमी का पूरा करता है। पेट के रोगियों के लिए पपीता रामबाण औषधि है। पूरे मौसम में पेट के रोगियों को प्रातः काल पपीता का सेवन करना चाहिए। बाजार में पेट के रोग की जो भी दवाइयां मिलती हैं, उनमें अधिकांशत : पपीता का रस व दूध उपयोग होता है। यह एक सशक्त प्रोटीन पाचन है, भोजन को पचाने की शक्ति पपीता में इतनी अधिक होती है, इसका अनुमान महज इसी बात से लगाया जा सकता है कि सब्जी या दाल बनाते समय इसमें कच्चे पपीता का टुकड़ा डाल दिया जाए तो वह कुछ ही समय में गल जाती है। भोजन के उपरांत यदि थोड़ा–सा पपीता खा लिया जाए तो खाना शीघ्र पच जाता है।

बवासीर के रोगियों का सुबह खाली पेट पपीता खाने से अभूतपूर्व लाभ होता है। खाली पेट पपीता खाने से अजीर्ण और मंदाग्नि में शीघ्र लाभ होता है।

शरीर में खून की कमी से बच्चों को दूध पिलाने वाली महिलाओं में दूध की कमी हो जाती है, तो डाल का पका पपीता रोजाना खाली पेट 15–20 दिन खाने से लाभ होता है। इस प्रकार पपीता की सब्जी व रायता खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। पपीता का रस दाद, खाज, खुजली पर लगाने से आराम मिलता है। इस प्रकार हमें चाहिए कि गुणों से भरपूर इस फल का हम अधिक से अधिक उपयोग करें।

**(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)**

# राहुल को लगे कृत्रिम पैर

**शाहदरा**– दिल्ली निवासी एवं संस्थान के विशिष्ट सेवा प्रेरक श्री रविशंकर जी अरोडा ने लॉक डाउन (कोरोना काल) के दौरान दोनों पांवों से दिव्यांग एक युवक के कृत्रिम पैर लगवाए।

दिल्ली के बदरापुर निवासी युवा क्रिकेट खिलाड़ी 2018 में जबलपुर मैच खेलने गए थे। लौटते समय चलती ट्रेन से नीचे गिर पड़े और पांव पहियों के नीचे आकर कट गए थे। राहुल को अब चलने फिरने में किसी सहारे की जरूरत नहीं है। उन्होंने संस्थान एवं व उसके विशिष्ट सेवा प्रेरक–अरोडा जी का आभार व्यक्त किया है।

# आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

**भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन**
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

**960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार**
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

**1200 नई शाखाएं**
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

**120 कथाएं**
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

**वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी**
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

**नारायण सेवा केन्द्र**
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

# विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

**26 देशों में पंजीयन**
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

**6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ**
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

**20 हजार दिव्यांगों को लाभ**
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

# अनुभव अमृतम्

ये बच्चों के बाल काटे जा रहे हैं, नाखून काट रहे हैं, वो अद्भुत दृश्य। पी.जी. जैन साहब की आँखों में आँसू आ गये। शिविर ढाई बजे समाप्त हुआ और तीन बजे भोजन किया। आज तो बाबूजी यूँ लगा कि श्री नाथ जी का राज भोग जीम रहे हैं, आज ऐसा लग रहा है कि 56 भोग जीम रहे हैं, ये आपका अपना प्रेम है। पहले पी.जी. जैन साहब से मिलन का बोल दिया, प्रेक्टिकल स्टोरी सब कुछ, आदरणीय पी.जी. जैन साहब बहुत गद्‌गद् हुए। उन्होंने देखा 14 करीबन डॉक्टर साहब, कितने व्यावहारिक? कितने घुल मिलकर बात कर रहे हैं? हैं तो इंसान ही ना? परम् पूज्य पुष्कर मुनि जी महाराज साहब पूज्य प्रवर्तक और बाद में जो आचार्य सम्राट बने, जो देवेन्द्र मुनि जी म.सा. उनके गुरुदेव और जैसे एक रंगमंच पर बहुत बड़ा सेवा का एक भजन हो रहा है। एक सेवा का रंगमंच, जिसमें केवल डायलॉग नहीं, केवल भजन नहीं, केवल गाने नहीं, घुटनों के बल चलकर आने वाला बच्चा खड़ा होकर चलता है, मूकबधिर बच्चा संकेतों से बात करके परम् प्रसन्न होता है। नारायण सेवा संस्थान में 25 से अधिक ऐसे बच्चे भगवान ने भेज दिये, 25 से अधिक प्रज्ञाचक्षु बच्चे, करीबन 70 बच्चे मंद–बुद्धि वाले उनकी उम्र 15 साल की है, लेकिन बुद्धि सात साल की है। किसी की उम्र बारह साल की है, परन्तु बुद्धि चार साल की है। हमारी बुद्धि कितने साल की है, कभी सोचा क्या? सब कुछ होते हुए, बहुत कुछ होते हुए भी जो देना नहीं चाहते, भड़भुजा घाटी, करोड़पति, अरबोंपति, एक एल्युमीनियम की कटोरी दीन दुःखी भाईयों को खाना भरने के लिये भी दान नहीं की। ठोकर चौराहा उदयपुर के एक भोई साहब सब्जी बेचने वाले, ठेले पर सब्जी बेचने वाले सब्जी लाकर देते हैं कि आप निःशुल्क आलू और टमाटर लीजिये। पी.जी. जैन फिर पुनः यहाँ पधारे, बहुत गद्‌गद्, 22 पीएनटी कॉलोनी के फर्स्ट फ्लोर पर पहले चाय पी, उनके आँखों में आँसू आ गये। मैंने पूछा कि बाबू जी आप रोते क्यों हो? ऐसा क्या हो गया, जो आप रोने लग गये? गद्‌गद् कण्ठ से, भरे हुए कण्ठ से पारसमल जी गुलाबचन्द जी जैन साहब, सोजत रोड़ हरियामाली वाले, गोरे गाँव रायगढ़ जिले वाले, उन्होंने कहा कि बाबूजी मैं 28 साल से इस तरह की संस्थान को ढूँढ रहा था। खूब घूमा हूँ, मैं कई जगह दौड़ा हूँ, मैं कई संस्थानों में गया हूँ।

**सेवा ईश्वरीय उपहार– 409 (कैलाश 'मानव')**

## अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

| Bank Name | Branch Address | RTGS/NEFT Code | Account |
|---|---|---|---|
| State Bank of India | H.M.Sector-4 | SBIN0011406 | 31505501196 |
| ICICI Bank | Madhuban | ICIC0000045 | 004501000829 |
| Punjab National Bank | KalajiGoraji | PUNB0297300 | 2973000100029801 |
| Union Bank of India | Udaipur Main | UBIN0531014 | 310102050000148 |

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा ( दैनिक समाचार-पत्र ) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर ( राज. ) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर ( राज. ) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023